पाठ-2

मीराबाई

(सन् 1498-1573)

प्रिय विद्यार्थियो,

पिछले अध्याय में आपने राम भक्ति शाखा के प्रमुख कवि गोस्वामी तुलसीदास के भक्ति और नीति के दोहों का अध्ययन किया है। इस पाठ में आप कृष्ण भक्ति शाखा की प्रसिद्ध कवयित्री व श्री कृष्ण की अनन्य भक्त मीराबाई के विषय में पढ़ेंगे। मीराबाई के इन पदों में श्री कृष्ण के प्रति उनकी असीम भक्ति द्रष्टव्य है।

आइए, पहले मीराबाई के जीवन व साहित्यिक परिचय को जान लें।

कवयित्री-परिचय

मीराबाई हिंदी भक्तिकाल की कृष्ण भक्त कवयित्री हैं। उनके काव्य में कृष्ण भक्ति के साथ साथ थोथी कुल मर्यादा तथा अन्धी नैतिकता के प्रति विद्रोह है। उन्होंने सोलहवीं शती में नारी स्वतन्त्रता का बिगुल भी बजा दिया। उन्हें नारी विमर्श की महान क्रान्तिकारी कवयित्री के रूप में देखा जा सकता है।

मीरा का जन्म सन् 1498 में जोधपुर (राजस्थान) के कुड़की गाँव में राव रत्नसिंह राठौर के घर हुआ। बचपन में ही माँ के निधन के कारण इनका पालन-पोषण इनके दादा दूदा जी ने किया। मीरा के दादा जी श्री कृष्ण के भक्त थे। उनकी कृष्ण भक्ति से प्रभावित होकर मीरा बचपन से ही श्री कृष्ण भक्ति में लीन हो गई। मीरा का विवाह मेवाड़ के राणा साँगा के सबसे बड़े पुत्र भोजराज के साथ हुआ। परन्तु विवाह के कुछ वर्ष बाद ही यह विधवा हो गई। इस दुखद घटना ने मीरा को संसार से विरक्त कर दिया। वैधव्य ने भक्ति के संस्कारों को पल्लवित किया और मीराबाई उस समय के राजघरानों की मर्यादा को छोड़ साधु सन्तों के बीच रहने, मन्दिरों में कीर्तन करने और नाचने गाने लगी। राजपूती शान के विरुद्ध आचरण से परिवार के सभी लोग मीरा से रुष्ट हो गए। इनके देवर ने तो कई बार मीरा को मरवाने की चेष्टा भी की, पर श्री कृष्ण जी की कृपा से मीरा हर बार बच गई। परिवार के लोगों के व्यवहार से दु:खी होकर मीरा वृन्दावन और फिर द्वारिका चली गयीं। वहीं उन्होंने देह त्याग दी। इनकी मृत्यु का वर्ष विभिन्न विद्वानों ने अलग-अलग बताया है।

रचनाएँ : मीराबाई की 'राग गोविन्द', 'राग सोरठा के पद', 'नरसी जी का मायरा', 'गीत गोविन्द की टीका' तथा मीरा की पदावली – ये रचनाएँ मानी जाती हैं। इनमें से 'मीरा पदावली' मीराबाई की प्रमुख रचना है। उनकी भक्ति में माधुर्य भाव है। शैली मुक्तक है जिसमें गेय तत्व है। भाषा में राजस्थानी, मारबाड़ी, ब्रज और गुजराती का संगम है।

पाठ-परिचय : यहाँ मीराबाई के दो प्रमुख पद लिए गए हैं। **पहले** पद में मीरा ने बालकृष्ण के सौन्दर्य का वर्णन किया है। मीराबाई श्री कृष्ण की मन को मोहित करने वाली सुन्दर छवि को अपनी आँखों में बसाना चाहती है। श्री कृष्ण की

Scanned with CamScanner

साँवली सूरत व बड़ी-बड़ी आँखें हैं। उन्होंने मोर के पंखों का बना मुकुट व मकर की आकृति के कुण्डल धारण किए हैं। माथे पर लाल रंग का तिलक शोभा बढ़ा रहा है। ओठों पर अमृत के समान मीठी ध्वनि निकालने वाली मुरली है और हृदय पर वैजन्ती माला सुशोभित है। छोटी-छोटी घंटियाँ कमर पर बंधी हैं, पाँवों में छोटे-छोटे घुँघरू बंधे हैं, जिनकी ध्वनि मन को आकर्षित करती है। मीरा के प्रभु श्री कृष्ण का यह रूप सन्तों को सुख देने वाला तथा भक्तों की रक्षा करने वाला है।

दूसरे पद में मीरा ने श्री कृष्ण को अपना सर्वस्व मानते हुए कहा कि गोवर्धन पर्वत को उठाने वाले श्री कृष्ण ही मेरे पति है-जिसके सिर पर मोर के पंखों का सुन्दर मुकुट है, वही कृष्ण मेरे अपने हैं-दूसरा कोई मेरा नहीं है। मैंने कुल की झूठी मर्यादा छोड़ दी है-मुझे अब किसी की परवाह नहीं है। सन्तों की संगति में रह कर मैंने लोक लाज को छोड़ दिया है। श्री कृष्ण रूपी प्रेम की बेल को मैंने अपने आँसुओं से सींचा हैं। अब प्रेम की वह बेल खिल गई है और उस पर भक्ति के मीठे-मीठे फल लगे हैं, जिससे आनन्द की प्राप्ति होगी। मीरा कहती है कि भक्तों को देखकर उसे खुशी मिलती है-संसार का झमेला तो दुःख ही देने वाला है जिसमें रोना धोना ही है। मीराबाई श्री कृष्ण से प्रार्थना करती है कि वह उसकी दासी है-अब संसार रूपी समुद्र से उसका उद्धार किया जाए। इस पद में नारी विमर्श की झलक मिलती है।

इन दोनों पदों का मूलपाठ व सप्रसंग व्याख्या निम्नलिखित अनुसार है :-

प्रिय विद्यार्थियो, आइए हम मीराबाई द्वारा रचित 'पदावली' (मूलपाठ) की सप्रसंग व्याख्या को समझते हैं।

मीराबाई (पदावली)

बसौ मेरे नैनन में नन्द लाल।
मोहनि मूरति साँवरी सूरति नैना बनै विसाल।
मोर मुकुट मकराकृत कुंडल अरुण तिलक दिये भाला
अधर सुधारस मुरली राजति उर वैजन्ती माल।
छुद्र घंटिका कटि तट सोभित नुपूर शब्द रसाल।
मीरा प्रभु सन्तन सुखदाई भक्त बछल गोपाल।। (1)

शब्दार्थ : नन्दलाल = नन्द के बेटे श्री कृष्ण। **बिसाल** = विशाल। **मकराकृत** = मकर की आकृति वाले **अरुण** = लाल। **अधर** = होंठ। **भाल** = मस्तक, माथा। **सुधारस** = अमृत के समान रस घोलने वाली। **छुद्र** = छोटी-छोटी। **कटि** = कमर। **नुपूर** = घुंघरू। **रसाल** = मीठा, मोहक। **बछल** = रक्षक।

प्रसंग : प्रस्तुत पद भक्तिकाल की कृष्ण भक्ति शखा की प्रसिद्ध कवयित्री मीरबाई द्वारा रचित है। यह पद 'मीरा पदावली' से लिया गया है। इसमें मीराबाई ने श्री कृष्ण जी के मनमोहक रूप का वर्णन किया है।

व्याख्या : मीराबाई अपनी इच्छा व्यक्त करते हुए कहती है कि हे श्रीकृष्ण! मेरे नयनों में निवास करो। आपकी मोहित करने वाली तथा सांवले रंग की सूरत है तथा नेत्र विशाल हैं। उस सौन्दर्य का वर्णन करती हुई वह कहती है कि मोर के पंखों से बना मुकुट आपके सिर पर सुशोभित है- मकर की आकृति के कुंडल कानों में तथा माथे पर लाल टीका लगा हुआ है। आपके होंठों पर अमृत रस घोलने वाली बांसुरी है जबकि आपके हृदय पर

Scanned with CamScanner

बैजन्ती के फूलों की माला है। छोटी-छोटी घंटियाँ कमर पर सुशोभित है। पांवों में घुंघरू की छनन-छनन की छवि बड़ी मीठी है। श्री कृष्ण जो अपने भक्तों की रक्षा करने वाले हैं, उनका यह रूप संतों को सुख देने वाला है।

भावार्थ : उपर्युक्त पद में श्री कृष्ण के विभिन्न अंगों का सुन्दर चित्र अंकित किया गया है ऐसा प्रतीत होता है कि मीराबाई ने अपने शब्दों के द्वारा श्री कृष्ण जी के बालरूप का एक सुन्दर व मनमोहक चित्र प्रस्तुत किया है।

मेरे तो गिरिधर गोपाल, दूसरो न कोई।
जाके सिर मोर मुकुट, मेरो पति सोई।
तात मात भ्रात बंधु, आपनो न कोई।
छांड़ि दई कुल की कानि, कहा करै कोई।
संतन ढिग बैठि बैठि, लोक लाज खोई।
अँसुअन जल सींचि सींचि, प्रेम बेलि बोई।
अब तो बेलि फैल गई, आनंद फल होई।
भगत देखि राजी भई, जगत देखि रोई।
दासी मीरा लाल गिरधर, तारौ अब मोही। (2)

शब्दार्थ –

गिरिधर = गोवर्धन पर्वत को धारण करने वाला; **कानि** = मर्यादा; **राजी** = प्रसन्न; **तारो** = उद्धार करना, तारना। **करिहै** = करेगा। **ढिग** = पास, निकट।

प्रसंग : प्रस्तुत पद भक्तिकाल की कृष्ण भक्ति शाखा की प्रसिद्ध कवयित्री मीराबाई द्वारा रचित है। यह पद 'मीरा पदावली' से लिया गया है। यहाँ मीरा ने गोवर्धन पर्वत को धारण करने वाले, गौओं को पालने वाले श्री कृष्ण को अपना पति मानते हुए इस संसार से पार लगाने की प्रार्थना की है।

व्याख्या : मीराबाई अपने आप को श्री कृष्ण को समर्पित करते हुए कहती है कि मेरे लिए तो श्रीकृष्ण ही सब कुछ हैं। मोर-मुकुट धारण करने वाले श्रीकृष्ण ही मेरे पति हैं। पिता, माता, भाई, बन्धु, रिश्तेदार इनमें कोई भी मेरा अपना नहीं है इसलिए मैंने अब लोकलाज और कुल की मर्यादा को छोड़कर साँवरे कृष्ण का ही सहारा ले लिया है। मैं लोकलाज की चिंता को त्यागकर संतों के पास जा बैठती हूँ अर्थात संतों की संगति करती हूँ। अपनी आँखों के आँसुओं से मैंने कृष्ण प्रेम की बेल को बड़ा किया है और अब वह बेल इतनी बड़ी हो गई है कि उस पर आनंद के फल लगने आरंभ हो गए हैं। मीरा कहती है कि उसे भगवान के भक्तों को देखकर खुशी मिलती है जबकि संसार के लोगों से उसका जी भर गया है अर्थात वह संसार को देखकर रो पड़ती है। इसलिए उसे वहाँ सिर्फ दुःख ही दुःख नज़र आता है। मीरा कहती है कि हे गोवर्धन पर्वत को धारण करने वाले प्रभु मैं आपकी दासी हूँ। अब आप ही मेरी मुक्ति करो।

भावार्थ : उपर्युक्त पद में मीरा की भक्ति भावना स्पष्ट दिखाई दे रही है। इस पद में गेयता का गुण भी है।

विशेष : यहाँ श्री कृष्ण के 'गिरिधर' 'गोपाल' दो नाम विशेष रूप से वर्णनीय है। श्री कृष्ण जी के गोकुल के लोगों को इन्द्र देवता के प्रकोप से बचाने के लिए गोवर्धन पहाड़ (गिरि) को धारण किया था। इसलिए उन्हें

Scanned with CamScanner

'गिरिधर' कहा जाता है। श्री कृष्ण गौओं की पालना और रक्षा करने वाले थे। उन्होंने कंस द्वारा भेजे गए राक्षसों से गौओं और ग्वालों की रक्षा की थी, अतः उन्हें गोपाल भी कहा जाता है।

अभ्यास

(क) विषय-बोध

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए–

(1) श्री कृष्ण ने कौन सा पर्वत धारण किया था ?

उत्तर : श्री कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को धारण किया था।

(2) मीरा किसे अपने नयनों में बसाना चाहती है ?

उत्तर : मीरा अपने नयनों में नन्द के लाल श्री कृष्ण को बसाना चाहती है।

(3) श्री कृष्ण ने किस प्रकार का मुकुट और कुण्डल धारण किए हैं ?

उत्तर : श्री कृष्ण ने मोर के पंखों का मुकुट और मकर की आकृति के कुण्डल धारण किए हैं।

(4) मीरा किसे देखकर प्रसन्न हुई और किसे देखकर दुःखी हुई?

उत्तर : मीरा भक्तों को देखकर प्रसन्न हुई और संसार को देखकर दुःखी हुई।

(5) सन्तों की संगति में रहकर मीरा ने क्या छोड़ दिया ?

उत्तर : संतों की संगति में मीरा ने लोक लाज और कुल की मर्यादा छोड़ दी।

(6) मीरा अपने आँसुओं के चल से किस बेल को सींच रही थी?

उत्तर : मीरा अपने आँसुओं के जल से श्री कृष्ण के प्रति प्रेम रूपी बेल को सींच रही थी।

(7) पदावली के दूसरे पद में मीराबाई गिरिधर से क्या चाहती है?

उत्तर : मीराबाई अपने गिरिधर से प्रार्थना करती है कि वे उसे भव सागर से पार करें।

II. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

(1) बसौ मेरे नैनन में नन्द लाल।
मोहनि मूरति साँवरी सूरति नैना बनै विसाल।
मोर मुकुट मकराकृत कुंडल अरुण तिलक दिये भाल।
अधर सुधारस मुरली राजति उर वैजन्ती माला।
छुद्र घंटिका कटि तट सोभित नुपूर शब्द रसाल।
मीरा प्रभु सन्तन सुखदाई भक्त बछल गोपाल।।

(2) मेरे तो गिरिधर गोपाल, दूसरो न कोई।
जाके सिर मोर मुकुट, मेरो पति सोई।
तात मात भ्रात बंधु, आपनो न कोई।
छांड़ि दई कुल की कानि, कहा करै कोई।
संतन ढिग बैठि बैठि, लोक लाज खोई।
अँसुअन जल सींचि सींचि, प्रेम बेलि बोई।
अब तो बेलि फैल गई, आनंद फल होई।

Scanned with CamScanner

भगत देखि राजी भई, जगत देखि रोई।
दासी मीरा लाल गिरधर, तारौ अब मोही।

उत्तर : इनका उत्तर व्याख्या भाग में देखें।

(ख) भाषा-बोध

(1) निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखें :

भाल : माथा, मस्तक, ललाट।

प्रभु : ईश्वर, ईश, परमात्मा, जगदीश।

जगत : संसार, जग, दुनिया, विश्व।

वन : जंगल, अरण्य, कानन।

(2) निम्नलिखित भिन्नार्थक शब्दों के अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

भिन्नार्थक शब्द	अर्थ	वाक्य
कुल :	वंश, जोड़	वह संभ्रान्त **कुल** से संबंध रखती है।
		या मेरे पास **कुल** बीस रुपये हैं।
कूल :	किनारा	कालिन्दी के **कूल** पर कदम्ब के पेड़ शोभा दे रहे हैं।
कटि :	कमर	युवराज की **कटि** में तलवार सुशोभित थी।
कटी :	जो कट गई हो	सैनिक की **कटी** टांग की जगह अब कृत्रिम टाँग लगा दी गई थ
		अथवा
		अपनी **कटी** पतंग को देखकर वह निराश हो गया।

Scanned with CamScanner

(ग) पाठ्येतर सक्रियता

(1) मीराबाई द्वारा वर्णित श्री कृष्ण के बाल रूप का एक चित्र लेकर अपने विद्यालय की भित्ति पत्रिका पर लगाएँ।

(2) मीराबाई की तरह अन्य कृष्ण भक्त कवियों जैसे सूरदास, रसखान आदि ने श्री कृष्ण के बाल सौन्दर्य का वर्णन अपनी रचनाओं में किया है। अपने स्कूल के पुस्तकालय से ऐसे कवियों के कुछ पद संकलित करें।

(3) मीराबाई के पदों की सी.डी/डी.वी.डी देखें या इंटरनेट पर इन पदों को सुन कर आनन्द लें।

(4) कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर 'मीरा पद गायन' प्रतियोगिता का आयोजन करें।

(घ) ज्ञान-विस्तार

मीरा ने प्राय: श्री कृष्ण के लिए 'गिरिधर गोपाल' शब्द का प्रयोग अपने पदों में किया है। 'गिरिधर' शब्द-गिरि अर्थात पहाड़ (पर्वत) तथा अर्थात् धारन करना। इस तरह गिरिधर का अर्थ हुआ—पहाड़ को धारण करने वाले। श्री कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को धारण किया था। गोवर्धन पर्वत द्वारा वृन्दावन वासियों को दिए जाने वाली प्राकृतिक संपदा के लिए गोवर्धन पर्वत की पूजा करने के लिए श्री कृष्ण द्वारा प्रेरित किया गया। इस पर इन्द्र देवता रुष्ट हो गए और उन्होने तेज़ वर्षा करके सारे गाँव को तबाह करने का प्रयास किया। उस समय श्री कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को धारण करके ब्रजवासियों की रक्षा की तथा इन्द्र देवता के घमण्ड को चूर-चूर कर दिया। इसलिए श्री कृष्ण को गिरिधर भी कहा जाता है। 'गोपाल' का अर्थ है गौओं की पालना करने वाले। श्री कृष्ण निश्चय ही पशु-पक्षियों और वृन्दावन की वनस्पति से प्रेम करने वाले तथा उनके रक्षक और पालक थे।

****

Scanned with CamScanner